1 यूहन्ना

यूहन्ना द्वारा लिखा पहला पत्र

1 जो सदा से थे, जिन्हें हम ने सुना, अपनी
आँखों से देखा, ध्यान से देखा और
अपने हाथों से छुआ, वही शुरुआत से जीवन
के वचन थे। 2 यह जीवन प्रगट हुआ और हम
ने देखा भी । हम साक्षी देने के साथ तुम्हारे
सामने ऐलान भी करते हैं, कि वही अनन्त
जीवन हैं। वह पिता के साथ थे और वह हम
पर प्रगट हुए। 3 जो हम ने देखा और सुना है
,हम उसका एलान करते हैं, ताकि तुम भी
हमारे साथ संगति कर सको। सच में हमारी
सहभागिता पिता और बेटे यीशु मसीह के
साथ है। 4 ये बातें हम तुम्हें इसलिए लिखते
हैं ताकि तुम खुशी से भर जाओ।
5 जो सु-संदेश हमें यीशु से मिला और तुम्हें
बताते हैं वह यह है कि परमेश्वर रोशनी
हैं और उन में किसी तरह का अँधेरा नहीं
है। 6 यदि हम कहें कि हमारी उनके साथ
सहभागिता है और अँधेरेपन का जीवन जियें,
तो हम झूठे हैं और सच्चाई की ज़िन्दगी नहीं
जी रहे हैं। 7 लेकिन यदि हम रोशनी की
ज़िन्दगी जियें, जैसे वह खुद रोशनी में हैं, तो
एक दूसरे के साथ हमारी सहभागिता है और
स्वर्गिक पिता के बेटे यीशु मसीह का खून
हमें हमारे सभी गुनाहों से साफ़ करता है।
8 अगर हम कहें कि हम परमेश्वरीय रास्ते
से इधर-उधर नहीं होते हैं, तो हम अपने
आपको धोखा देते हैं, और हमारे जीवन
में सच्चाई नहीं है। 9 यदि हम अपने चूक
जाने को मान लें, यीशु हमें माफ़ करने
में विश्वासयोग्य और ईमानदार हैं और
मलिनता को पूरी तरफ़ साफ़ कर डालते हैं।
10 यदि हम कहें कि हम से कभी चूक नहीं
होती है, तो हम यीशु को झूठा ठहरा रहे हैं
और उनका वचन हमारे पास नहीं है।

2 मेरे बच्चो, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिख
रहा हूँ, ताकि तुम किसी बात में चूक न
जाओ। लेकिन यदि ऐसा होता है, तो हमारे
पास सच्चे यीशु मसीह पिता के साथ एक
निष्कलंक वकील हैं। 2 यीशु स्वयं ही हमारे
अपराधों के लिए प्रायश्चित्त हैं, सिर्फ़ हमारे ही
नहीं लेकिन सारी दुनिया के लोगों के लिए।
3 इसी से हमें मालूम है कि हम यीशु को
जानते हैं, यदि हम उनकी आज्ञाओं को मानते
हैं। 4 जो कहता है, “मैं यीशु को जान गया
हूँ और उनकी आज्ञाओं का पालन नहीं
करता, वह झूठा है और उसमें सच्चाई नहीं
है। 5 लेकिन जो उनकी बात मानता है, उसी
में परमेश्वर के प्रेम का सबूत दिखता है, इसी
से हम जान पाते हैं कि हम यीशु में हैं।
6 जो कहता है कि मैं यीशु में हूँ, उसका
जीवन वैसा ही होना चाहिए, जैसा यीशु का
था।
7 भाईयो बहनो, मैं तुम्हें कोई नयी आज्ञा
नहीं दे रहा हूँ, लेकिन वही पुरानी आज्ञा जो
तुम्हें शुरू में दी गयी थी। पुरानी आज्ञा वही
परमेश्वर का वचन है जो तुमने शुरू से सुना
था।
8 मैं फिर से तुम्हें एक नयी आज्ञा दे रहा हूँ,
यह यीशु और तुम में सच है क्योंकि अँधेरा
खत्म हो रहा है और सच्ची रोशनी पहले ही से
चमक रही है। 9 जो कहता है कि वह रोशनी

में है और अपने भाई से घृणा करता है, वह
अभी तक अँधेरे में है। 10 जो अपने भाई से
प्रेम रखता है, उसका जीवन रोशनी में है,
इसलिए उसमें ठोकर का कोई कारण नहीं
है। 11 लेकिन जो दूसरे से नफ़रत करता है वह
अँधेरे में है और अंधकारमय जीवन जी रहा
है, उसे मालूम ही नहीं कि वह किस दिशा
में जा रहा है, क्योंकि उस अँधेरे ने उसकी
आँखों को अँधा बना दिया है।
12 छोटे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा
हूँ क्योंकि यीशु मसीह की वजह से हमारे
अपराध माफ़ हो चुके हैं।
13 हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा
हूँ क्योंकि जो शुरुआत से हैं, उन्हें तुमने जान
लिया है। जवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा
हूँ क्योंकि तुमने दुष्ट[a] पर जीत हासिल कर
ली है। छोटे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा
हूँ, क्योंकि तुमने पिता को जान लिया है।
14 पिता लोगो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ
क्योंकि जो शुरू से हैं, उन्हें तुमने जान लिया
है। नौजवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ
क्योंकि तुम लोग मज़बूत हो, और परमेश्वर
की बातें, तुम में बनी रहती हैं और तुमने दुष्ट[b]
को जीत लिया है।
15 इस दुनिया से लगाव मत रखो न ही
इस की चीज़ों से। अगर कोई दुनिया से
लगाव रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम
नहीं है। 16 जो कुछ भी इस दुनिया में है -
पुराने स्वभाव या मन की चाहत, आँखों की
अभिलाषा और जीवन में हासिल की जाने
वाली योग्यताओं और वस्तुओं का घमण्ड,
पिता की ओर से नहीं है, लेकिन इस संसार
की ओर से है। 17 यह दुनिया भी खत्म हो
रही है और उसकी अभिलाषाएँ भी, लेकिन
जो कोई परमेश्वर की इच्छा को पूरी करता
है, वह बना रहेगा।
18 छोटे बच्चो, आखिरी समय आ चुका है
और जैसा तुमने सुना था कि मसीह विरोधी
आएगा, वह सच था, क्योंकि मसीही विरोधी
अभी भी बहुत से हैं। इसी से हम जान पाते
हैं, कि ये आखिरी समय है। 19 वे हम में से
निकल गए, लेकिन उन में से कोई भी हम में
का नहीं था। क्योंकि यदि वे हम में के होते,
बेशक वे हमारे साथ ही रहे होते। लेकिन वे
हम में से निकल गए, ताकि यह मालूम हो
जाए कि वे सभी हम में के नहीं थे।
20 तुम्हारे पास उस पवित्र की तरफ़ से
अभिषेक है और तुम सब कुछ जानते हो
21 मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा, क्योंकि तुम
सच्चाई जानते नहीं हो, लेकिन इसलिए कि
जानते हो, और कोई भी झूठ, सच में से नहीं
निकलता है। 22 झूठा है कौन? वही जो इस
बात का इन्कार करता है कि यीशु छुड़ाने
वाले हैं। जो पिता और बेटे को नहीं मानता,
वही मसीह विरोधी है। 23 जो बेटे को नहीं
मानता उसके पास पिता नहीं, लेकिन जो बेटे
को मान लेता है, उसके पास पिता भी है।
24 इसलिए, जो तुमने आरम्भ से सुना है,
उसे अपने भीतर बना कर रखो। जो तुमने
शुरूआत से सुना है, यदि तुम में बना रहे,
तब तुम भी पुत्र और पिता में बने रहोगे।
25 और जो वायदा उन्होंने किया है, वह
सदा काल का जीवन है।
26 मैंने तुम्हें ये बातें उन लोगों के बारे में
लिखी हैं, जो तुम्हें गुमराह करते हैं 27 लेकिन
तुमने जो अभिषेक प्रभु से पाया है तुम में
बना है। इस बात की ज़रूरत नहीं कि वे
(गुमराह करने वाले)तुम्हें सिखाएँ। तुम्हारे

[a] **2.13** शैतान [b] **2.14** शैतान

भीतर का अभिषेक(पवित्र आत्मा) तुम्हें वे बातें सिखाता है, जो तुम्हें जाननी चाहिये। वह सच्चाई ही सिखाता है, गलत बातें नहीं । जो कुछ तुमने इस अभिषेक से सीखा है, उसे थामें रहो।

28 अब छोटे बच्चो, यीशु की सहभागिता में बने रहो, ताकि जब वह प्रगट हों, तो हमारी हिम्मत बनी रहे और हमें उनके सामने शर्मिन्दा न होना पड़े।

29 यदि तुम्हें मालूम है कि वह निर्दोष और सच्चे हैं तो यह भी सच है कि हर एक जो सही जीवन जीता है उन से पैदा हुआ है।

3 देखो, पिता ने कैसा प्रेम हम पर उण्डेला है, कि हम परमेश्वर के बेटे बेटियाँ कहलाएँ,और हम हैं भी। दुनिया हमें इसीलिये नहीं पहचानती है क्योंकि उसने परमेश्वर को नहीं पहचाना है। 2 प्रियो, अभी हम परमेश्वर के बेटे-बेटियाँ हैं, अभी यह नहीं पता है कि हम भविष्य में क्या होंगे, लेकिन हमें इतना मालूम है कि जब यीशु आएँगे, हम उनकी तरह होंगे, क्योंकि हम यीशु को वैसा ही देखेंगे जैसे वह हैं। 3 हर एक जिस के पास यह आशा है, वह अपने आपको वैसा ही पवित्र करता है, जैसा यीशु पवित्र हैं।

4 जो कोई उचित करने से चूक जाता है, वह परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा के खिलाफ जाता है, क्योंकि चूक जाना[a] उनकी इच्छा-आज्ञा के खिलाफ़ जाना है। 5 तुम्हें मालूम है कि यीशु इसलिए आए ताकि सभी के अपराधों को उठा ले जाएँ और उन से कभी भी कोई चूक नही हुई थी। 6 जो कोई उन में बना रहता है, वह अनुचित करना जारी नहीं रखता है। जो अनुचित करता है उसने न तो यीशु को देखा है और न जाना है।

7 छोटे बच्चो, तुम्हें कोई धोखे में न रखे। मुक्ति पाया हुआ इन्सान ही ऐसा सही जीवन जीता है, जिस तरह का जीवन यीशु का है। 8 जो अपने लक्ष्य को पा सकने मे नाकामयाब रहता है, वह शैतान से है। क्योंकि शैतान शुरू से गुनाह करता आया है। परमेश्वर के बेटे[b] इसलिए आए, ताकि वह शैतान के कामों को बर्बाद कर डालें। 9 जो कोई परमेश्वर से पैदा हुआ है, उसका लक्ष्य से हटना जारी नहीं रहेगा, क्योंकि उनका बीज उसमें बना रहता है और वह गुनाह में बना नहीं रह सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से पैदा हुआ है। 10 इसी बात से परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान के बीच अन्तर देखा जा सकता है। जो सही चाल चलन को बना कर नहीं रखता है, वह परमेश्वर से नहीं है, न ही वह जो अपने भाई-बहन से प्रेम नहीं करता है।

11 जो संदेश तुमने शुरूआत से सुना है, वह यही है, कि हम एक दूसरे से स्नेह रखें। 12 हम कैन की तरह न बनें, जो उस दुष्ट से था जिस ने अपने भाई का खून कर डाला। उसने अपने भाई का खून क्यों किया? क्योंकि उसके काम बुरे थे और उसके भाई के काम अच्छे।

13 मेरे भाईयो-बहनो, यदि दुनिया तुम से नफ़रत करती है, तो अचम्भा न करना। 14 हम जानते हैं कि हम मौत से गुज़र कर ज़िन्दगी में दाखिल हो चुके हैं, क्योंकि हम भाईयों से प्रेम करते हैं। जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता वह मौत की दशा में रहता है। 15 जो अपने भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है और तुम्हें मालूम है कि किसी भी हत्यारे में सदा का जीवन[c] नहीं रह सकता।

16 इसी से हम परमेश्वर के प्रेम को जानते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन को हमारे लिए कुर्बान कर दिया। हमें भी अपना जीवन

[a] **3.4** बलवा करना [b] **3.8** यीशु [c] **3.15** परमेश्वरीय जीवन

अपने भाईयो-बहनों के लिए देना चाहिए।
17 लेकिन जिस किसी के पास इस दुनिया
की चीज़ें हैं, और वह अपने भाई को ज़रूरत
में देखने के बावजूद अपने मन को, सख्त
कर लेता है, तो परमेश्वर का प्रेम[a] उसके
अंदर कैसे रह सकता है? 18 मेरे छोटे बच्चो,
हमारा प्रेम शब्द का नहीं, लेकिन काम में
और सच्चाई में दिखे। 19 उसी से हम जान
जाते हैं, कि हम सत्य के हैं और यीशु के
सामने अपने मनों को आश्वासन दे सकते
हैं। 20 इसलिए कि यदि हमारा मन[b] हमें दोषी
ठहराए, तो परमेश्वर हमारे मन से बढ़ कर
हैं और सब कुछ जानते हैं।
21 प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोषी न
ठहराए, तो हमें परमेश्वर पर भरोसा होता
है। 22 और हम जो कुछ माँगते हैं, हमें उन से
मिलता है, क्योंकि हम उनकी आज्ञाएँ मानते
हैं और वही करते हैं, जो उन्हें पसंद है।
23 यह उनकी आज्ञा है, कि हमें परमेश्वर के
बेटे यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना
चाहिए और जैसी उनकी आज्ञा है, एक दूसरे
से प्रेम करना चाहिए। 24 जो उनकी आज्ञाओं
को मानता है उन में बना रहता है और वह
उस में। इसी से[c] हम जानते हैं, कि वह अपनी
आत्मा के द्वारा जो उन्होंने हमें दिया है हम में
रहते हैं।

4 प्रिय भाईयो बहनो, किसी भी आत्मा पर
विश्वास मत कर लेना, लेकिन परखना
कि वे परमेश्वर से हैं या नहीं, क्योंकि इस
दुनिया में बहुत से झूठे[d] भविष्यद्वक्ता हैं।
2 परमेश्वर की आत्मा की पहचान यह है:
हर एक आत्मा जो यह मान लेती है कि यीशु
मसीह देह में आए, परमेश्वर की ओर से है।
3 प्रत्येक वह आत्मा[e] जो यह स्वीकार नहीं
करती कि यीशु देह में आए, परमेश्वर की
ओर से नहीं है। यह यीशु विरोधी आत्मा है,
जिस के आने के बारे में तुमने सुन रखा था।
यह आत्मा इस समय दुनिया में है।
4 छोटे बच्चो, तुम परमेश्वर के हो और
तुमने उन पर जीत हासिल की है, इसलिए
कि जो इस संसार में है उससे बढ़ कर वह हैं
जो तुम में हैं। 5 वे संसार के हैं इसलिए संसार
के बारे में बोलते हैं और संसार उनकी सुनता
है। 6 हम परमेश्वर के हैं। जो परमेश्वर
को जानता है, हमारी सुनता है, लेकिन जो
परमेश्वर का नहीं है, हमारी नहीं सुनता है।
इसी से हमें सही और गलत की पहचान होती
है।
7 प्रियो, हम एक दूसरे से प्रेम रखें, इसलिए
कि प्रेम परमेश्वर से है और हर एक जो प्रेम
रखता है, परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और
परमेश्वर को जानता है। 8 जो प्रेम नहीं करता
है, वह परमेश्वर को नहीं जानता है क्योंकि
परमेश्वर प्रेम हैं। 9 परमेश्वर का प्रेम इस तरह
से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने प्रिय
एकलौते बेटे को इस दुनिया में भेजा, ताकि
हम उनके द्वारा जिंदा रहें[f]। 10 प्रेम इस में नहीं
कि हम ने परमेश्वर पिता से प्रेम किया है,
लेकिन यह कि उन्होंने हम से प्रेम किया और
हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए अपने बेटे
को कुर्बान होने के लिए भेज दिया।
11 प्रिय दोस्तो, इसलिए कि परमेश्वर ने
हमसे इतना प्रेम किया, हमें भी एक दूसरे से
प्रेम करना चाहिए। 12 किसी ने भी परमेश्वर
को नहीं देखा है, लेकिन यदि हम एक दूसरे

[a] **3.17** या अगापे [b] **3.20** विवेक [c] **3.24** पवित्र आत्मा से [d] **4.1** जाली [e] **4.3** व्यक्ति [f] **4.9** जीवन पाएँ

से प्रेम रखते हैं, तो परमेश्वर हम में रहते हैं
और हमारे द्वारा उनका प्रेम हम में पूरी तरह
से दिखाई दिया है।
13 परमेश्वर ने अपने आत्मा को इस सबूत
के रूप में दिया है, कि हम उन में रहते हैं और
वह हम में। 14 इसके साथ ही हम ने अपनी
आँखों से देखा है और गवाही देते हैं कि पिता
ने अपने बेटे को दुनिया का मुक्तिदाता होने
के लिए भेजा है। 15 जितने लोग यह ऐलान
करते हैं कि यीशु परमेश्वर के बेटे हैं, उन में
परमेश्वर निवास करते हैं और वे परमेश्वर
में।
16 हमें मालूम है कि परमेश्वर हमसे कितना
प्रेम करते हैं, और हम ने अपना भरोसा उन
पर रखा है। परमेश्वर प्रेम हैं, और वे सभी
जिन में प्रेम है, वे परमेश्वर में जी रहे हैं और
परमेश्वर उन में। 17 जैसा हम परमेश्वर में रह
रहे हैं, हमारा प्रेम दिन ब दिन बढ़ता ही रहता
है। और तब हम न्याय के दिन डरेंगे नहीं,
लेकिन बड़ी हिम्मत से उनके सामने खड़े रह
सकेंगे, क्योंकि यहाँ इस दुनिया में हम मसीह
की तरह हैं। 18 ऐसे प्रेम में किसी तरह का डर
नहीं पाया जाता है, क्योंकि सच्चा[a] प्रेम सब
तरह के डर को निकाल फेंकता है। यदि हम
डरते हैं, तो यह इन्साफ़ के दिन का डर है।
यह दिखाता है कि उनके प्रेम ने हमारे जीवन
में जड़ नहीं पकड़ी 19 इसलिए कि उन्होंने हम
से पहले प्रेम किया, हम उन से प्रेम करते हैं।
20 यदि कोई कहता है, “मैं परमेश्वर से
प्रेम करता हूँ, लेकिन अपने मसीही भाई या
बहन से नफ़रत करता है, तो वह इन्सान झूठ
बोलता है, इसलिए कि यदि हम जिन लोगों
को देखते हैं, उन से प्रेम नहीं करते, तो हम
परमेश्वर से प्रेम कैसे कर सकते हैं, जिन्हें
हम ने नहीं देखा है। 21 स्वयं परमेश्वर ने
यह आदेश दिया है कि जो परमेश्वर से प्रेम
रखता है, वह अपने भाईयों और बहनों से भी
प्रेम रखे।

5 जो व्यक्ति यह मान लेता है कि यीशु ही
मसीह हैं, वही परमेश्वर से जन्मा है। हर
वह जन जो उत्पन्न करने वाले से प्रेम करता
है, वह उन से भी प्रेम रखता है जो परमेश्वर
से उत्पन्न हुए हैं।
2 जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और
उनकी आज्ञाओं को मानते हैं उसी से सिद्ध
होता है, कि हम परमेश्वर के बेटे-बेटियों
से प्रेम करते हैं। 3 परमेश्वर की आज्ञाओं
को मानना, परमेश्वर से प्रेम रखना है और
परमेश्वर की आज्ञाएँ मुश्किल[b] नहीं हैं।
4 जो व्यक्ति परमेश्वर से पैदा हुआ है,
वह संसार पर जीत प्राप्त करता है। और
संसार पर जीत हासिल करने वाला है हमारा
विश्वास। 5 कौन है जो संसार पर जीत
हासिल करता है? वही जो यह मान चुका
है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र[c] हैं।
6 यह वही हैं जिन का आना ‘पानी’ और
‘खून’ से हुआ केवल पानी से नहीं, बल्कि
पानी और खून से। इस बात की गवाही पवित्र
आत्मा देता है, क्योंकि यह आत्मा सत्य है।
7 स्वर्ग में तीन हैं, जो गवाही देते हैं - पिता,
उनका वचन[d] और पवित्र आत्मा। ये तीनों
एक हैं।
8 इस धरती पर भी तीन हैं जो गवाही देते
हैः पवित्र आत्मा, पानी और खून[e]। ये तीनों
भी एक हैं।
9 यदि हम लोगों की गवाही मान लेते हैं, तो
परमेश्वर की गवाही क्यों न मान लें, उनकी
गवाही तो बड़ी है, क्योंकि परमेश्वर ने अपने
बेटे के बारे में गवाही दी है। 10 जो परमेश्वर

[a] 4.18 परिपक्व [b] 5.3 बोझ [c] 5.5 देहधारी परमेश्वर [d] 5.7 यीशु [e] 5.8 यीशु मसीह की कुर्बानी

के बेटे पर भरोसा रखता है, उसके भीतर
ही एक गवाही है। जो परमेश्वर पर भरोसा
नहीं रखता, उसे परमेश्वर झूठा ठहराते हैं,
क्योंकि उसने परमेश्वर के बेटे के बारे में
दी गयी गवाही पर विश्वास नहीं किया।
11 गवाही यह हैः परमेश्वर ने हमें हमेशा का
जीवन दिया है और यह जीवन उनके बेटे
में है। 12 जिस के पास बेटा है, उसके पास
ज़िन्दगी है जिस के पास बेटा नहीं है, उसके
पास हमेशा की ज़िन्दगी भी नहीं है।
13 मैंने ये बातें तुम सभी को जिन्होंने
परमेश्वर के बेटे के नाम पर विश्वास किया
है लिखी हैं, ताकि तुम यह जान लो कि
अनन्त जीवन तुम्हें मिल चुका है।
14 उनके सम्बन्ध में हमें यह हिम्मत है, कि
यदि हम उनकी योजना[a] के अनुसार कुछ
माँगते हैं, वह हमारी सुनते हैं। 15 यदि हम को
मालूम है कि जो कुछ हमारी बिनती होती है,
वह सुनते हैं तो हमें यह भी मालूम है कि जो
कुछ हम ने माँगा, हमें मिल चुका है।
16 यदि कोई इन्सान अपने भाई को ऐसा
गुनाह करते देखे, जिस से वह मरेगा नहीं तो
प्रार्थना करे, प्रभु उसे जीवन देंगे। लेकिन ऐसा
गुनाह भी है, जो मौत तक पहुँचाता है मैं नहीं
कहता कि ऐसा गुनाह करने वालों के लिए
प्रार्थना की जाए। 17 हर तरह की दुष्टता गुनाह
है। ऐसा गुनाह भी है जिस की सज़ा मौत नहीं
है।
18 हम जानते हैं कि जो परमेश्वर से जन्मा
है, वह गुनाह करना जारी नहीं रखता, लेकिन
वह जो परमेश्वर से जन्मा है, गुनाह करने से
बचता है। और ऐसे व्यक्ति को शैतान छू भी
नहीं सकता।
19 हमें मालूम है कि हम परमेश्वर के हैं और
सारी दुनिया उस दुष्ट के शिकंजे में है।
20 हमें यह पता है कि परमेश्वर के पुत्र,
यीशु आ चुके हैं और परमेश्वर ने हमें समझ
दी है, ताकि हम उस यीशु को जो सच्चे हैं,
अपना सकें। उनके बेटे यीशु मसीह जो सच्चे
हैं, हम उन्हीं में हैं। वही सच्चे परमेश्वर और
अनन्त जीवन हैं।
21 छोटे बच्चो, अपने आप को मूरतों से
बचाओ। ऐसा ही हो।

[a] **5.14** इच्छा

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com